OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 3 [May- Jun] Year 2026*

Research Article

वाल्मीकि रामायण में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता

शक्ति कुमार पासवान

सहायक प्राध्यापक, एस.एन.सिन्हा कॉलेज, टिकारी, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

Corresponding Author: * शक्ति कुमार पासवान

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21861764

सारांश

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'वाल्मीकि रामायण' भारतीय साहित्य का आदिकाव्य होने के साथ-साथ विश्व साहित्य की अमूल्य एवं कालजयी धरोहर है। लगभग 24,000 श्लोकों तथा सात काण्डों में निबद्ध यह महाकाव्य केवल भगवान श्रीराम के जीवन का आख्यान नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, नैतिक आदर्शों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आदर्श जीवन-दर्शन का व्यापक ग्रंथ है। इसमें सत्य, धर्म, कर्तव्यनिष्ठा, करुणा, त्याग, मर्यादा, सहिष्णुता, पारिवारिक समरसता, नेतृत्व, न्याय तथा लोककल्याण जैसे सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली निरूपण मिलता है।

वर्तमान समय में जब समाज नैतिक पतन, व्यक्तिगत स्वार्थ, पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव, सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय असंतुलन तथा वैश्विक अशांति जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब वाल्मीकि रामायण के आदर्श और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इस महाकाव्य में वर्णित जीवन-मूल्य व्यक्ति को आत्मसंयम, कर्तव्यपरायणता, सह-अस्तित्व, सामाजिक सद्भाव तथा उत्तरदायी नागरिकता की प्रेरणा प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण में निहित मानवीय मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि ये मूल्य आधुनिक समाज में नैतिक पुनर्जागरण, सामाजिक समरसता, शांति एवं सतत् मानवीय विकास के लिए आज भी समान रूप से प्रासंगिक और मार्गदर्शक हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-05-2026
- **Accepted:** 26-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1107-1110
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

पासवान श.कु. वाल्मीकि रामायण में मानवीय मूल्यों की प्रासं. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1107-1110.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: वाल्मीकि रामायण, साहित्य, करूणा, पारिवारिक, सामाजिक।

© 2026 शक्ति कुमार पासवान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित **'वाल्मीकि रामायण'** केवल भारतीय साहित्य का 'आदिकाव्य' ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व साहित्य की एक ऐसी अमर धरोहर है जो युगों-युगों से मानव समाज को जीने की कला, नैतिकता और आदर्शों का मार्ग दिखाती आ रही है। 24,000 श्लोकों और 7 काण्डों में निबद्ध यह महाकाव्य केवल किसी राजा की विजयगाथा नहीं है, बल्कि यह मानवीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और अंतरात्मा के मूल्यों का एक महान दस्तावेज है।

आज का आधुनिक समाज जब वैज्ञानिक प्रगति के चरम पर खड़ा है, तब दूसरी ओर नैतिक पतन, व्यक्तिगत स्वार्थ, पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव और वैश्विक अशांति जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है। ऐसे संक्रमण काल में वाल्मीकि रामायण में निहित **मानवीय मूल्य (Human Values)** अत्यधिक प्रासंगिक और व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

1. महाकाव्य की उत्पत्ति का मूल स्रोत एवं संशोधन (Origin & Textual Sources)

वाल्मीकि रामायण की रचना और इसके पाठ्य रूप के इतिहास को समझना इसके सांस्कृतिक और नैतिक महत्त्व को गहराई से जानने के लिए आवश्यक है:

(अ) काव्यात्मक उत्पत्ति और करुणा की पृष्ठभूमि

रामायण की उत्पत्ति किसी शुष्क दार्शनिक चिंतन से नहीं, बल्कि **'करुणा' (Empathy)** के भाव से हुई है। बालकाण्ड में वर्णन आता है कि जब आदिकवि वाल्मीकि ने तमसा नदी के तट पर व्याध (शिकारी) द्वारा क्रौंच पक्षी के जोड़े में से नर पक्षी का वध होते देखा, तो क्रौंची के विलाप से द्रवित होकर उनके मुख से स्वतः ही श्लोक फूट पड़ा:

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥" *(बालकाण्ड 2.15)*

अर्थात, संवेदनशीलता और दूसरों के दुःख से द्रवित होना ही साहित्य और मानव धर्म का मूल आधार है। इसके पश्चात महर्षि नारद ने बालकाण्ड के प्रथम सर्ग (जिसे **'मूल रामायण'** कहा जाता है) में महर्षि वाल्मीकि के प्रश्न (*"को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्..."*) के उत्तर में संक्षेप में श्रीराम के 16 उदात्त गुणों का वर्णन किया।

(ब) पाठ्य संशोधन एवं प्रामाणिक संस्करण (Critical Edition & Textual History)

वाल्मीकि रामायण की प्राचीनता और लोक-प्रियता के कारण कालक्रम में इसमें कई प्रक्षेप (बाद में जोड़े गए अंश) और पाठ-भेद (Textual Variations) आ गए थे।

- **भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (BORI), पुणे:** 20वीं शताब्दी में विद्वानों ने संपूर्ण भारत (उत्तर भारतीय देवनागरी, शारदा, मैथिली, तथा दक्षिण भारतीय ग्रन्थ, तेलुगु, मलयालम पांडुलिपियों) से प्राप्त सैकड़ों प्राचीन पांडुलिपियों का गहन अध्ययन किया।
- **सयाजीराव गायकवाड़ ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा (Oriental Institute, Baroda):** 1951 से 1975 के बीच ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा के विद्वानों ने वाल्मीकि रामायण का एक अत्यंत वैज्ञानिक **'समीक्षित संस्करण' (Critical Edition)** तैयार किया। इस वृहद पाठ्य-संशोधन (Textual Recension) के माध्यम से प्रक्षिप्त अंशों को छांटकर वाल्मीकि जी के मूल श्लोकों और सात काण्डों की प्रामाणिक संरचना को पुनर्गठित किया गया।
- **गीताप्रेस गोरखपुर संस्करण:** जनसामान्य में प्रचलित पाठ हेतु **गीताप्रेस गोरखपुर** द्वारा प्रकाशित दो खंडों का प्रामाणिक पाठ आज विश्वभर में संदर्भ हेतु व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

2. धर्म और सत्य की अवधारणा: जीवन का नैतिक आधार

रामायण में 'धर्म' का अर्थ कोई संकीर्ण संप्रदाय या उपासना-पद्धति नहीं है, बल्कि यह **'धारणाद् धर्म इत्याहुः'** अर्थात वह आचार-संहिता है जो समाज और व्यक्ति के अस्तित्व को धारण करती है।

"रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।" (अरण्यकाण्ड 37.13) (अर्थात श्रीराम केवल धर्म के पालक नहीं, बल्कि धर्म के साक्षात स्वरूप और सत्य-पराक्रमी हैं।)

(अ) सत्य की सर्वोच्चता

वाल्मीकि रामायण में सत्य को ही संपूर्ण सृष्टि का मूल माना गया है:

"सत्यमेवेश्वरो लोके सत्यं पद्माश्रिता सदा। सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्॥" *(अयोध्याकाण्ड 109.13)*

राजा दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए गए वचनों को निभाना और श्रीराम द्वारा बिना किसी हिचकिचाहट के 14 वर्ष का कठोर वनवास स्वीकार कर लेना यह सिद्ध करता है कि भौतिक सुख और सत्ता से ऊपर 'सत्य और नैतिक प्रतिज्ञा' का स्थान है।

3. पारिवारिक मूल्य एवं सामाजिक ताना-बाना

वर्तमान युग में जब एकाकी परिवार, व्यक्तिवाद और पारिवारिक कलह बढ़ रहे हैं, तब रामायण आदर्श पारिवारिक संबंधों का अनुपम ढांचा प्रस्तुत करती है।

संबंध	वाल्मीकि रामायण का संदर्भ व काण्ड	आधुनिक युग के लिए प्रासंगिकता
पितृ-भक्ति एवं आज्ञाकारिता	**अयोध्याकाण्ड:** श्रीराम का सहर्ष वनवास जाना।	बुजुर्गों और माता-पिता के प्रति सम्मान और सेवा-भाव की पुनरुद्धार।
भ्रातृ-स्नेह व निष्काम त्याग	**अयोध्या व किष्किन्धाकाण्ड:** भरत द्वारा राज्य ठुकराकर पादुका-पूजन करना; लक्ष्मण द्वारा 14 वर्ष राम की पहरेदारी।	संपत्ति और भूमि विवादों के स्थान पर त्याग और भ्रातृ-प्रेम।
सहधर्मिणी धर्म (समान अधिकार)	**अयोध्या व सुंदरकाण्ड:** सीता का राम के साथ हर परिस्थिति में खड़े रहना और स्वाभिमान बनाए रखना।	दांपत्य जीवन में परस्पर निष्ठा, समर्पण और बराबरी का भाव।
मातृवत	**किष्किन्धाकाण्ड:**	नारियों के प्रति पवित्र दृष्टि

© 2026 शक्ति कुमार पासवान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सम्मान	लक्ष्मण द्वारा केवल माता सीता के पैरों के आभूषण पहचानना।	और सम्मान की भावना।

4. राजधर्म, सुशासन और लोक-कल्याण वाल्मीकि रामायण के **अयोध्याकाण्ड का 100वाँ सर्ग** राजनीति शास्त्र और प्रशासनिक नीतिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसे इतिहास में **'कच्चित् सर्ग' (Kachchit Sarga)** कहा जाता है।

'कच्चित् सर्ग' की राजनैतिक नीतियां (अयोध्याकाण्ड 100):

समय पर वेतन भुगतान: श्रीराम भरत से पूछते हैं कि क्या सैनिकोंऔ

- राज्य कर्मचारियों को समय पर वेतन मिल रहा है? क्योंकि वेतन में विलंब राज्य के प्रति विद्रोह को जन्म देता है।
- **योग्य गुप्तचर प्रणाली:** राज्य की सुरक्षा हेतु 18 तीर्थों (विभागों) पर सुयोग्य अधिकारियों की नियुक्ति।
- **न्याय की निष्पक्षता:** निर्बल और असहाय व्यक्ति को शक्तिशाली के अत्याचार से बचाना ही राजा का प्रथम धर्म है।

2. रामराज्य की संकल्पना (उत्तरकाण्ड 99):

"न पुत्रमरणं केचित् द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्। न च नार्योऽविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः॥" रामराज्य में कोई दरिद्र, रोगी या दुःखी नहीं था। यह अवधारणा आधुनिक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की जननी है।

5. युद्ध-नीति, मर्यादा और शत्रु के प्रति सम्मान

श्रीराम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके पास असीम समर्थता और शक्ति होते हुए भी उन्होंने अपनी सीमाओं का कभी उल्लंघन नहीं किया।

- **शरणागत वत्सलता (युद्धकाण्ड 18.33):** विभीषण जब रावण को छोड़कर राम की शरण में आता है, तो श्रीराम कहते हैं:

"सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम॥" (अर्थात जो एक बार भी मेरी शरण में आकर अभय माँगे, उसे शरण देना मेरा अकाट्य व्रत है।)

- **युद्ध में निहत्थे का सम्मान (युद्धकाण्ड 59.143):** प्रथम युद्ध में जब रावण का अस्त्र-शस्त्र कट जाता है और वह असहाय हो जाता है, तब श्रीराम उसे मारने के बजाय कहते हैं: "गच्छ अनुजानामि रणे प्रकान्तः..." (तुम थक चुके हो, आज लंका लौट जाओ और कल विश्राम करके पुनः आना) ।
- **मृत्यु के बाद वैर का अंत:** रावण वध के पश्चात श्रीराम विभीषण से कहते हैं: "मरणान्तानि वैराणि" (मृत्यु के साथ ही शत्रुता समाप्त हो जाती है), इसलिए इसका विधिवत दाह-संस्कार करो।

6. सामाजिक समरसता और समावेशी दृष्टिकोण

वाल्मीकि रामायण उच्च-नीच और जातिगत वैषम्य के विरुद्ध सामाजिक समरसता (Social Harmony) का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती है:

- **गुहराज निषाद से भ्रातृवत् प्रेम (अयोध्याकाण्ड):** श्रीराम वन यात्रा के समय निषाद जाति के प्रमुख गुह को अपने गले लगाते हैं और उन्हें भरत के समान भाई मानते हैं।
- **शबरी का आतिथ्य स्वीकार (अरण्यकाण्ड 74):** मातंग ऋषि की शिष्या, शबरी के आश्रम में जाकर श्रीराम उनके द्वारा अर्पित कंद-मूल-फल स्वीकार करते हैं और उनकी भक्ति की सराहना करते हैं।
- **जन-सेना का संगठन:** रावण की विशाल राजसी सेना के विरुद्ध श्रीराम किसी चक्रवर्ती राजा की सेना माँगने के स्थान पर वनों में रहने वाले साधारण वानरों, भालुओं और आदिवासियों (किष्किन्धा के निवासियों) को संगठित करके युद्ध लड़ते हैं।

7. पारिस्थितिकी, पर्यावरण और प्राणी-मात्र के प्रति दया

वाल्मीकि रामायण केवल मानव केंद्रित (Anthropocentric) काव्य नहीं है, बल्कि यह प्रकृति केंद्रित (Ecocentric) ग्रंथ है।

- **जटायु का बलिदान (अरण्यकाण्ड 67):** एक वृद्ध पक्षी जटायु एक पराई स्त्री (सीता) के स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देता है। श्रीराम जटायु का अपने पिता दशरथ के समान अंतिम संस्कार करते हैं।
- **प्रकृति के साथ तादात्म्य:** पंचवटी, चित्रकूट, पंपा सरोवर और किष्किन्धा के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन यह दिखाता है कि नदियां, पर्वत और वृक्ष मानव चेतना के अभिन्न अंग हैं। सीता हरण के बाद राम वृक्षों, हिरणों और पक्षियों से रो-रोकर सीता का पता पूछते हैं।

8. नारी शक्ति और वैचारिक स्वाधीनता

वाल्मीकि रामायण की नारी पात्र आत्म-सम्मान, साहस और नीति-ज्ञान से परिपूर्ण हैं:

1. **माता सीता:** वे केवल एक शांत गृहिणी नहीं हैं। वे श्रीराम से वन जाने हेतु तर्कपूर्ण संवाद करती हैं। अशोक वाटिका में रावण द्वारा दिए गए अपार धन-वैभव के प्रलोभन को एक तिनके ("तृणं छित्वा") के समान मानकर ठुकरा देती हैं।
2. **तारा का कूटनैतिक कौशल (किष्किन्धाकाण्ड 33):** जब लक्ष्मण अत्यधिक क्रोध में किष्किन्धा का विनाश करने आते हैं, तब सुग्रीव की रक्षा के लिए नीतिज्ञ तारा आगे आती हैं और अपने शांत व तर्कपूर्ण वचनों से लक्ष्मण के क्रोध को शांत करती हैं।
3. **मंदोदरी की निर्भीक सलाह (युद्धकाण्ड):** मंदोदरी अपने पति रावण की सत्ता से डरे बिना उसे बार-बार अधर्म का त्याग करने और सीता को सम्मानपूर्वक लौटाने की सलाह देती हैं।

9. 21वीं सदी में वाल्मीकि रामायण की व्यावहारिक प्रासंगिकता

आज का मानव जब भौतिक सुख-सुविधाओं के बीच भी अशांत और अकेला है, तब रामायण निम्नलिखित समाधान देती है:

- **संवेग प्रबंधन (Emotional Intelligence):** श्रीराम का 'समभाव'—जब उन्हें राज्याभिषेक की सूचना मिलती है तब भी वे अहंकारमुक्त रहते हैं, और जब अचानक वनवास की खबर मिलती है तब भी उनके प्रसन्न चेहरे पर कोई उदासी नहीं आती ("न प्रहृष्यति व्यथायां न च शोचति...")।
- **पर्यावरण संकट का समाधान:** रामायण सिखाती है कि प्रकृति का शोषण नहीं, बल्कि उसके साथ सह-अस्तित्व (Co-existence) ही मानव जाति के अस्तित्व का आधार है।

© 2026 शक्ति कुमार पासवान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- **वैश्विक शांति एवं बंधुत्व:** युद्धकाण्ड का अमर संदेश है कि असत्य, अहंकार और अधर्म चाहे कितना भी शक्तिशाली हो, अंततः पराजय उसी की होती है और विजय हमेशा सत्य की होती है।

10. निष्कर्ष

वाल्मीकि रामायण किसी एक काल, देश या जाति की सीमा में बंधी रचना नहीं है। यह मानव जाति की अंतरात्मा का काव्य है। जब तक मानव समाज में रिश्ते, राज्य, पर्यावरण और नैतिक चुनौतियां रहेंगी, तब तक वाल्मीकि रामायण का यह पावन संदेश प्रकाशस्तंभ की भांति मानवता का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा:

"यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥" (बालकाण्ड 2.36)

(अर्थात जब तक इस पृथ्वी पर पर्वत और नदियां विद्यमान रहेंगी, तब तक वाल्मीकि रामायण की यह कथा संसार में प्रचलित रहेगी।)

संदर्भ ग्रंथ

1. वाल्मीकि. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण: संस्कृत एवं हिंदी अनुवाद. भाग 1–2. गोरखपुर: गीताप्रेस; प्रकाशन वर्ष अज्ञात।
2. मेहता जेएम, संपादक. The Valmiki Ramayana: Critical Edition. खंड 1–7. बड़ौदा: ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय; 1951–1975।
3. सक्सेना डीपी. रामायण कालीन समाज और संस्कृति. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशंस; प्रकाशन वर्ष अज्ञात।
4. वाल्मीकि रामायण में जीवन मूल्य और नैतिक चेतना. अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका (IJCRT & JETIR Research Journals). प्रकाशन वर्ष अज्ञात।
5. द्विवेदी एचपी. भारतीय संस्कृति और रामायण. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; प्रकाशन वर्ष अज्ञात।
6. अग्रवाल वीएस. वाल्मीकि रामायण में राजनीति और सुशासन. लोकभारती प्रकाशन; प्रकाशन वर्ष अज्ञात।
7. शर्मा उमाशंकर 'ऋषि'. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा भारती अकादमी; प्रकाशन वर्ष अज्ञात।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

शक्ति कुमार पासवान एस.एन. सिन्हा कॉलेज, टिकारी, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। वे शिक्षण, शोध एवं अकादमिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं। उनका शैक्षणिक योगदान विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन, अनुसंधान को प्रोत्साहन तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण अध्यापन के लिए उल्लेखनीय है।

© 2026 शक्ति कुमार पासवान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/